विषय:हिंदी

कक्षा-१२

**जय शंकर प्रसाद**

‘देव सेना का गीत’

‘कार्नेलिया का गीत’

**जय शंकर प्रसाद** : **जीवनी**

**जन्म** : सन् 1888 में काशी के सूंघनी साहु-परिवार में

**शिक्षा** : उन्होंने विधिवत शिक्षा केवल आँठवीं कक्षा तक प्राप्त की। स्वशिक्षा द्वारा उन्होंने

संस्कृत, पालि, उर्दू, और अंग्रेजी भाषाओं का गहन अध्ययन किया।

**लेखन** **कार्य** : वेदों और उपनिषदों में उनका विशेष चिंतन और मनन रहा। साहित्य की

विविध विधाओं में उनकी लेखनी निरन्तर चलती रही।

**रचनाएँ** :

*काव्य* :- झरना, आँसू, लहर, कामायनी, कानन कुसुम।

*नाटक* :- राज्यश्री, अजातशत्रू, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, ध्रुवस्वामिनी।

*उपन्यास* :- कंकाल, तितली, इरावती (अधूरा)

*कहानी* *संग्रह* :- छाया, प्रतिध्वनि, आँधी, इन्द्रजाल, आकाश द्वीप

*निबन्ध* :- काव्य कला तथा अन्य निबंध

**पुरस्कार** :- ‘ हिन्दुस्तानी एकेडमी ' एवम ‘ काशी नागरी प्रचारिणी सभा ' द्वारा कामायनी पर

मरणोपरांत - ‘मंगला प्रसाद पारितोषिक'

**साहित्यिक** **विशेषताएं** :-

प्रसाद-साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें भारतीय दर्शन, संस्कृति एंव मनोविज्ञान के साथ-साथ भारतीय जीवन का सफल चित्रण हुआ है जैसे

1. प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण

2. मानव प्रेम

3. ईश्वर प्रेम

4. देश प्रेम

5. मानव सौंदर्य

**भाषा** **शैली** :-

1. संस्कृत निष्ठ खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग।
2. मुक्त छंद की रचनाएँ।

3. छायावादी काव्य के प्रमुख कवि।

1. प्रतीक योजना, बिम्ब विधान

5. अलंकारों का सुंदर प्रयोग।

1. माधुर्य गुण से युक्त शब्दावली।

**मृत्यु** :-

सन् 1937 में साहित्य के यह देवता चिरनिद्रा में लीन हो गये।

**पाठ परिचय**

'देव सेना का गीत'

'देव सेना का गीत' 'जय शंकर प्रसाद' के प्रसिद्ध नाटक 'स्कन्दगुप्त' का अंश है। देव सेना स्कन्दगुप्त के प्रेम से वंचित रह जाने पर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में अपने दुख, वेदना और व्याकुलता को प्रकट करते हुए गीत गाती है।

हुणों के हमले में मालवा का राजा बंधुवर्मा और उसका परिवार मारा जाता है, लेकिन उनकी बहन देव सेना किसी तरह बच कर निकल जाती है। देव सेना स्कन्दगुप्त से प्रेम करती है और उसे पूरा विश्वास है कि इस मुश्किल घड़ी में स्कन्दगुप्त उसका साथ देगा और उससे विवाह करेगा।

लेकिन स्कन्दगुप्त तो धन कुबेर की पुत्री विजया से विवाह करना चाहता है। इस बात से देवसेना पूरी तरह से टूट जाती है और अपने पूरे जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर देती है।

सप्रसंग व्याख्या : आह वेदना . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . . नीरवता अनंत अगडाई।

प्रसंग : कवि - 'जयशंकर प्रसाद'

कविता - 'देवसेना का गीत'

संदर्भ : इसमें देवसेना अपने दु:ख और संघर्षों का वर्णन करते हुए कहती है कि उसकी जीवन

यात्रा अगर किसी ने अधिकार किया है तो वह है एकमात्र उसका अकेलापन। देवसेना कहती है कि मुझे जीवन के अन्तिम क्षणों में भी दुख और पीड़ा ही मिल रही है। मैंने अपना सारा जीवन इसी आशा में गुजार दिया कि स्कन्दगुप्त मुझसे प्रेम करता है, लेकिन यह तो मात्र मेरा वहम था। इसी कारण मैंने अपने जीवन को देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया अर्थात् अपने जीवन की मधुर यादों को दान कर दिया अतः जीवन के अन्तिम क्षणों में भी मुझे दुख ही दु:ख मिल रहे हैं, मानों संध्या भी उसके दुख में आर्मी बहा रही हो। ऐसा लगता है मानो उसकी जीवन रूपी यात्रा में अगर कोई साथ चला है, तो मात्र उसका अकेलापन।

विशेष : देव सेना के जीवन संघर्षों का सजीव चित्रण हुआ है।

काव्य सौंदर्य :

1. खडी बोली।

2. मुक्त छंद की रचना है।

3. छायावादी रचना है।

4. करूण रस है।

5. उपमा, अनुप्रास और मानवीकरण अलंकार है।

काव्य सौंदर्य : श्रमित स्वप्न . . . . . . . . . . . . . . . . . विहाग की तान उठाई।

भाव पक्ष : इसके माध्यम से देव सेना कहती है कि जिस प्रकार दिन भर के थके हारे

पथिक को कोई भी मधुर गीत अच्छा नहीं लगता उसी प्रकार अपने जीवन के संघर्षों से थकी हारी देवसेना को स्कन्दगुप्त का प्रेम-प्रसंग अच्छा नहीं लगता।

शिल्प सौंदर्यः-

1. कवि - जयशंकर प्रसाद

2. कविता - देवसेना का गीत

3. भाषा - खड़ी बोली

4. शैली - छायावादी

5. रस - वियोग श्रृंगार रस

6. छंद - मुक्तछंद

7.अलंकार - स्वप्न का मानवीकरण (मानवीकरण अलंकार)

8. शब्दावली - तत्सम

9. गुण - माधुर्य

10. शब्द शक्ति - लाक्षणिकता

11. प्रतीक विधान - पथिक, स्वप्न

12. छंद कविता - तुकान्त

13. सार - देवसेना का संघर्ष

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न 1. कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

उत्तर : कवि ने आशा को बावली इसलिए कहा है क्योंकि जीवन के अन्तिम दिनों में

स्कन्दगुप्त आकर देवसेना से प्रणय-निवेदन करता है। देवसेना सोचती है कि जिस समय

मुझे स्कन्दगुप्त की जरूरत थी उसने मेरा साथ नहीं दिया। अब मैंने अपना सारा जीवन

लोगों की सेवा में समर्पित कर दिया है तो मैं अपना प्रण नहीं छोड़ सकती। तब देवसेना

अपने मन को समझाते हुए कहती है कि हे! मेरे मन, तू क्यों पागल हुआ जा रहा है। अगर

क्षणि क सुख के लिए तू स्कन्दगुप्त की ओर मुड़ता है तो जो त्याग, तपस्या और बलिदान

तूने किया है वह सब कुछ व्यर्थ चला जायेगा। मेरे जीवन भर की सारी देश सेवा रूपी

कमाई तू खो देगा।

**पाठ परिचय**

‘कार्नेलिया का गीत’

'कार्नेलिया का गीत' 'जयशंकर प्रसाद' के प्रसिद्ध नाटक ‘चन्द्रगुप्त' से लिया गया है। सिकन्दर के सेनापति सेल्यूकस की बेटी कार्नेलिया जब सिंघु नदी के तट पर खड़े होकर भारत की गौरव गाथा तथा अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य को देखती है तो इसे अपना देश मानने लगती है। वह कहती है कि भारत वह स्थान है जो माधुर्य और लालिया से भरा हुआ है। जहाँ अनजान व भूले-भटके लोगों को भी आश्रय मिल जाता है। दूर-देशों से आये हुए रंग-बिरंगे पक्षी भी भारत में ही अपना घौंसला बनाना चाहते हैं। यहाँ के लोग दूसरों के दुख-तकलीफों को देखकर अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। विशाल समुद्र की लहरें भी भारत के किनारों से टकराकर शांत हो जाती हैं अर्थात उन्हें भी यहीं आकर आश्रय मिलता है।

काव्य सौंदर्य : हेम कुंभ .................... रजनी भर तारे।

भावः- उषा रूपी पनिहारिन अपने सोने के घड़े में सुख-समृद्धि और

वैभव लाकर सम्पूर्ण भारतवर्ष में उड़ेल देती है। अर्थात बिखेर देती है। जबकि सारी रात जागने के कारण तारे मस्ती में ऊँघने लगते हैं।

शिल्प सौंदर्य :

1. कवि - जयशंकर प्रसाद
2. कविता - कार्नेलिया का गीत
3. भाषा - खड़ी बोली
4. शैली - छायावादी
5. रस - शांत रस
6. छंद - मुक्त छंद
7. अलंकार - उषा और तारों का मानवीकरण किया गया है। रूपक, अनुप्रास और मानवीकरण

अलंकार हैं।

8. प्रतीक विधान - उषा, तारे, घड़ा।

9. शब्द शक्ति - लाक्षणिकता

10. छंद कविता - तुकान्त

11. गुण - माधुर्य

12. सार - प्रभातकालीन वातावरण का आकर्षण एवम् सजीव वर्णन।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. 'उड़ते खग' और 'बरसाती आँखों के बादल' में क्या विशेष अर्थ व्यंजित होता है?

उत्तर :'उड़ते खग' के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि पक्षीगण तक भारतवर्ष को अपना

घर (नीड़) समझकर इसी ओर मुख करके उड़ते हैं और अपने बच्चों को जन्म देते हैं। अर्थात् यहाँ प्रत्येक प्राणी को अपने घर जैसी सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। \_ 'बरसाती आँखों के बादल' के माध्यम से कवि कहता है कि इस देश के लोग अपने दुख के क्षणों को भूलकर दूसरों के दुःख को अपना समझकर उनके लिए सहारा बनते हैं इस देश में प्रेम ओर करुणा सर्वव्याप्त है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

**देवसेना का गीत**

प्र. 1. मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

प्र. 2. देव सेना की हार व निराशा के क्या कारण हैं?

प्र. 3. काव्य सौंदर्य (क) लौटा लो .......लाज गँवाई

**कार्नेलिया का गीत**

प्र. 1. कार्नेलिया का गीत कविता में प्रसाद ने भारत की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है?

प्र. 2. जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।